K-631

Total Pages : 3 Roll No. .....

MASL-604

नाटक एवं नाटिका भाग-01

MA Sanskrit (MASL)

3rd Semester Examination, 2023 (Dec.)

Time : 2 Hours] **Max. Marks : 70**

नोट : यह प्रश्नपत्र सत्तर (70) अंकों का है जो दो (02) खण्डों क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।

(खण्ड-क)

(दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (2×19=38)

1. मकवि शूद्रक का जीवन परिचय एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

2. अधोलिखित श्लोक की सप्रसंग विस्तृत व्याख्या कीजिए-

वाप्यां स्नाति विचक्षणो द्विजवरो मूर्खोऽपि वर्णाधमः
फुल्लां नाम्यति वायसोऽपि हि लतां या नामिता बर्हिणा।
ब्रहाक्षत्रविशस्तरन्ति च यया नावा तयैवेतरे
त्वं वापीव लतेव नौरिव जनं वेश्यासि सर्वं भज।।

3. मृच्छकटिकम् की नायिका वसन्तसेना का चरित्र चित्रण करें।

4. मृच्छकटिकम् की कथा का नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से विस्तृत विवेचन कीजिए।

5. मृच्छकटिकम् प्रकरण के कथोपकथन अथवा संवाद कला पर प्रकाश डालें।

(खण्ड-ख)

(लघु उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (4×8=32)

1. मृच्छकटिकम् प्रकरण का संक्षिप्त सारांश लिखिए।

2. नेपथ्य एवं विदूषक को परिभाषित करें।

3. मृच्छकटिकम् की भाषा शैली की समीक्षा कीजिए।

4. मृच्छकटिकम् में प्रयुक्त प्रमुख प्राकृत भाषाओं का वर्णन कीजिए।

5. शर्विलक की प्रमुख चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

6. अधोलिखित श्लोक की व्याख्या कीजिए-

नो मुष्णान्यबलां विभूषणवतीं फुल्लामिवाहं लतां
विप्रस्वं न हरामि न काञ्चनमथो यज्ञार्थमभ्युद्धृतम्।
धात्र्युसंगगतं हरामि न तथा बालं धनार्थी क्वचि-
त्कार्याकार्य विचारिणी मम मतिश्चौर्येऽपि नित्यं स्थिता।।

7. अधोलिखित श्लोक की व्याख्या कीजिए-

शून्यैर्गृहैः खलु समाः पुरुषा दरिद्राः
कूपैश्च तोयरहितैस्तरूभिश्च शीर्णैः।
दृष्टपूर्वजन्मसंगमविस्मृताना-
मेवं भवन्ति विफलाः परितोषकालाः।।

8. विदूषक की हास्य कला का वर्णन करें।